केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय के फेसबुक पर लगा पंचायतनामा व आजीविका मिशन के ट्रेनिंग प्रोग्राम कम्युनिटी जर्नलिस्ट का वीडियो लिंक

बेस्ट प्रैक्टिस की श्रेणी में आया कम्युनिटी जर्नलिस्ट

पंचायतनामा डेस्क

गांव की पगडंडियों से निकल कर देश की राजधानी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती कम्युनिटी जर्नलिस्ट को अब हर कोई जानने लगा है. इन कम्युनिटी जर्नलिस्ट को पंख दिया है पंचायतनामा व आजीविका मिशन के कांसेप्ट ने. पिछले दिनों नयी दिल्ली में आयोजित दीनदयाल योजना अंतर्गत केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने प्रभात खबर प्रकाशन समूह का पाक्षिक अखबार पंचायतनामा और झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस के कम्युनिटी जर्नलिस्ट के कांसेप्ट को बेस्ट प्रैक्टिस के तौर पर चुना है. इस नेशनल बेस्ट प्रैक्टिस कार्यशाला में झारखंड की ओर से जेएसएलपीएस ने पांच बेस्ट प्रैक्टिस प्रस्तुत किये, जिसमें पंचायतनामा-जेएसएलपीएस के कम्युनिटी जर्नलिस्ट की काफी सराहना हुई. मालूम हो कि पंचायतनामा ने झारखंड में आजीविका मिशन के साथ मिलकर गांव की महिला सखियों को प्रशिक्षण दिया था. अब तक करीब 60 ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण के बाद गांव-गांव में पंचायतनामा ने कम्युनिटी जर्नलिस्ट बनाया. ये महिलाएं जो कम्युनिटी जर्नलिस्ट बनी, अपने-अपने गांव-समाज की हर गतिविधियों की खबरें भेजने का काम करती हैं, जिसे पंचायतनामा के अंक में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है. कम्युनिटी जर्नलिस्ट के अलावा झारखंड के अन्य चार बेस्ट प्रैक्टिस की भी सराहना हुई, जिसमें बीसी सखी, सामुदायिक सेवा केंद्र, आजीविका संसाधन, स्वच्छता व सखी मंडल शामिल हैं.

सुर्खियों में रहा झारखंड

नेशनल बेस्ट प्रैक्टिस कार्यशाला में पंचायतनामा के इस कांसेप्ट के कारण झारखंड सुर्खियों में रहा. बिहार, ओड़िशा जैसे कई राज्यों ने इस मॉडल से जुड़ने की इच्छा जाहिर की है. झारखंड की ओर से कुमार विकास ने इस कांसेप्ट को पेश किया था. इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव अमरजीत सिन्हा, संयुक्त सचिव अटल डुल्लू सहित देश भर के सभी राज्यों के प्रतिनिधि शामिल थे.

धड़ल्ले से बोली कम्युनिटी जर्नलिस्ट रूबी खातून

नयी दिल्ली में आयोजित नेशनल बेस्ट प्रैक्टिस कार्यशाला में राजधानी रांची के अनगड़ा क्षेत्र की कम्युनिटी जर्नलिस्ट रूबी खातून ने शून्य से शिखर की कहानी धड़ल्ले से बतायी. बरकत सखी मंडल में बुककीपर के तौर पर काम करनेवाली रूबी खातून ने कहा कि काम करते हुए मुझे कम्युनिटी जर्नलिस्ट के तौर पर चुना गया. इसके लिए पंचायतनामा-जेएसएलपीएस की ओर से प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण में बहुत सारी जानकारी दी गयी. इसके तहत स्टोरी लिखना, स्टोरी को प्राथमिकता देना, इंटरव्यू लेने के तरीके, बातचीत के तरीके आदि की विस्तृत जानकारी हमें दी गयी. साथ ही फोटो व वीडियो के बारे भी बताया गया. इसके अलावा कंप्यूटर और वाट्स एप की भी जानकारी दी गयी. रूबी के अलावे अन्य कम्युनिटी जर्नलिस्टों ने भी अपनी-अपनी कहानी कार्यशाला में उपस्थित लोगों को सुनायी.

नयी दिल्ली में आयोजित नेशनल बेस्ट प्रैक्टिस कार्यशाला में कम्युनिटी जर्नलिस्ट के कार्यों को देखते अधिकारी.

मार्च 2017 में कम्युनिटी जर्नलिस्ट की रखी बुनियाद

पंचायतनामा-जेएसएलपीएस की ओर छह दिवसीय कम्युनिटी जर्नलिस्ट का पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 से 29 मार्च, 2017 तक शुरू हुआ. प्रभात खबर परिसर में आयोजित पत्रकारिता प्रशिक्षण कार्यक्रम सामान्य नहीं, बल्कि बहुत ही खास था. सात जिले की 30 महिलाएं और लड़कियां प्रशिक्षु के तौर पर पहुंची थी. सुदूर गांव से लेकर कस्बे तक की महिलाएं. अधिकांश वैसी, जो पहली दफा रांची आयी थी. ये महिलाएं और लड़कियां आजीविका मिशन से जुड़ कर अपने-अपने इलाके में बदलाव की नयी इबारतें रच रही हैं. इस प्रशिक्षण शिविर में शामिल हुई ग्रामीण महिलाओं की अपनी अलग ही कहानी थी. किसी की नौंवी क्लास में ही शादी हो गयी. वह दो बच्चे की मां बनी, फिर से पढ़ना शुरू की और अब पीजी में पढ़ाई कर रही हैं. पीएचडी करने का इरादा है सो अलग. इसके अलावे दूसरे प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी करीब 30 महिलाओं ने शिरकत की थी.

एक साल के अंदर बेस्ट प्रैक्टिस बनी कम्युनिटी जर्नलिस्ट

पंचायतनाम-जेएसएलपीएस का कम्युनिटी जर्नलिस्ट कांसेप्ट एक साल से कम समय यानी मात्र 11 माह में ही अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी. कम्युनिटी जर्नलिस्ट को न सिर्फ बेस्ट प्रैक्टिस के लिए चुना गया, बल्कि इन ग्रामीण महिलाओं के हौसलों को भी सराहा गया. कम्युनिटी जर्नलिस्ट कांसेप्ट की यह धारणा भरभरा कर टूटी कि सरकारी योजनाएं असरकारी नहीं होती. सरकारी योजनाओं का अपना असर होता है. अगर असर नहीं होता तो दूर-देहात की महिलाएं इतने आत्मविश्वास से लैश होकर नहीं पहुंचती.

गांव-समाज को असली हकीकत दिखतीं कम्युनिटी जर्नलिस्ट

सखी मंडल से जुड़ीं गांव-देहात की महिलाएं आज अपनी लेखनी से ग्रामीणों को गांव-समाज की असली हकीकत दिखा रही है. कम्युनिटी जर्नलिस्ट की खबरों को इस कारण तवज्जों मिलता है, क्योंकि वो उसी गांव-समाज से जुड़ी होती हैं और इसके विकास को अच्छी तरह से समझ पाती है. इससे ग्रामीण महिलाओं में भी बदलाव साफ नजर आने लगा है. आत्मविश्वास से लबरेज सखी मंडल की दीदियां आज कम्युनिटी जर्नलिस्ट बन का गांव-समाज के विकास में अपनी अहम भूमिका तो निभाती ही है, वहीं समूह में कार्य कर आर्थिक रूप से समृद्ध भी हो रही है. इसके अलावा इन सखी मंडल की दीदीयों द्वारा चलाये जा रहे बदलाव की जानकारी लोगों तक पहुंचाने में पंचायतनामा-जेएसएलपीएस का भी सहयोग भरपूर मिल रहा है.

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने की सराहना

ग्रामीण विकास मंत्रालय के फेसबुक पेज पर लगा वीडियो.

महिला सखियों के कम्युनिटी जर्नलिस्ट बनने और इससे ग्रामीण क्षेत्र में आ रही जागरूकता की केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने सराहना की है. यही कारण है कि मंत्रालय के फेसबुक पर पंचायतनामा व आजीविका मिशन के ट्रेनिंग प्रोग्राम का वीडियो लिंक लगाया है.

सराहनीय प्रयास, पर और काम करना है : पारितोष उपाध्याय

जेएसएलपीएस के सीइओ पारितोष उपाध्याय ने पंचायतनामा-जेएसएलपीएस के कांसेप्ट कम्युनिटी जर्नलिस्ट को बेस्ट प्रैक्टिस के लिए चुने जाने की सराहना की है. उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए जो भी अच्छे कार्य व प्रयोग किये गये हैं, उनके लिए बेस्ट प्रैक्टिस कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें सभी राज्यों के प्रतिनिधियों को भी इन नये प्रयोग को दिखाया गया. अपने राज्य में करने के लिए प्रेरित किया गया. कार्यशाला में झारखंड के पांच बेस्ट प्रैक्टिस को प्रस्तुत किया गया. इसमें कम्युनिटी जर्नलिस्ट के कार्यों की खूब सराहना मिली. वहीं, स्वच्छ भारत मिशन में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका के बारे में बताया गया. अभी तक झारखंड में महिला समूहों के द्वारा एक लाख शौचालय बनाया गया है. आजीविका से जोड़ने के लिए और रोजगार उपलब्ध कराने के जो कार्य हुए हैं, उन कार्यों की भी सराहना हुई. बीसी मॉडल के तहत भी बैंकिग सेवाएं घर तक पहुंच रही है. जेएसएलपीएस के लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि कुछ कार्य बड़े पैमाने पर हुए हैं, जैसे- शौचालय निर्माण, आजीविका संसाधन केंद्र आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है.